आज का पुरुषार्थ 20 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" सभी तरह से आकर्षणों से मुक्त होने का पुरुषार्थ और इसकी प्राप्ति "*

हमें अपनी स्थिति को **सम्पूर्णता** की ओर ले चलना है। हम अपने इस **लक्ष्य** को ज़रा दृढ़ करे। ऐसा न हो कि हम **ज्ञान मार्ग** में चल तो रहे है, ब्राह्मण तो बन गये लेकिन अपने भविष्य का कुछ ख्याल न हो !

लक्ष्य जब दृढ़ होता है तो मनुष्य के कदम उस ओर तीव्र गति से अग्रसर होता है। लक्ष्य हीन जीवन मनुष्य को भटकाता है। मन को भटकाता है।

इसलिए ब्रह्मा बाबा की तरह सूक्ष्म फ़रिश्ता हमें बनना है। और बाबा कहते भी है ...

" जैसे जैसे तुम्हारी पवित्रता बढ़ती जाती है तुम बहुत ताकतवर होते जाते हो "

अब **संगमयुग** पर शायद हम अपनी सूक्ष्म शक्तियों को नहीं भी पहचानते। पर हमारी purity दिनों दिन बढ़ती चले। हमारे लगाव झुकाव समाप्त होते चले।

जहाँ जहाँ हमारे attachment है, जहाँ जहाँ हम लगे हुए है, जहाँ जहाँ हमारे अंदर मेरा पन है, वह सब समाप्त होता चले। बहुत अच्छी बात बाबा कहते है ..

जब तुम सभी **आकर्षणों से मुक्त** हो जाओगे तो तुम्हारे अंदर अलौकिक आकर्षण बहुत बढ़ जायेगा। सारे संसार की आत्मायें तुम्हारे ओर आकर्षित होंगी।

तो जो **विश्व सेवा** करना चाहते है, जो बाबा को प्रख्यात करना चाहते है, जो चाहते है हम संसार को नई राह दिखाये, हम सभी के मन में छिपे हुए व समाये हुए **अज्ञान अंधकार को दूर** करने वाले बन जाये, सभी आत्मायें **मनोविकारों से मुक्त हो, विकर्मो से मुक्त हो** ..

तो वह **सूक्ष्म रूप** से अपने को चेक करें कहीं भी लगाव या इस संसार में आकर्षण तो नहीं रहा हुआ है?

ब्रह्मा बाबा का उदहारण: त्याग करने बाद कोई feeling नहीं .. मेरा कहाँ से आया ? सब बाबा का था, उसने ही दिया था, उसके ही कार्य में लग गया। मैं न होता, **कोई और होता** ! संसार का खेल ही ऐसा चलता है।

तो सभी अपने **सूक्ष्म आकर्षणों को check करे।** देह की ओर आकर्षण है? किसी विशेष व्यक्ति के ओर आकर्षण है? किसी खान-पान की चीज़ की ओर आकर्षण है? मान-सम्मान की ओर आकर्षण है? बच्चे में आकर्षण है? किसी के विशेषताओं प्रति आकर्षण है?

मान-सम्मान भी मनुष्यों को बहुत आकर्षित करता है। यद्यपि मान मिलना सौभाग्य की बात है। मान मिलना महान आत्माओं को ही मिला करता है। जो श्रेष्ठ कार्य करते है, मान उन्हें ही मिलेगा।

मान मिलना **सर्वश्रेष्ठ** चीज़ है। लेकिन मान अधिकार से प्राप्त करे। **मिले हुए मान को प्रभु अर्पण कर दे।** ताकि इस दलदल में आत्मा उलझ ना जाये, फंस न जाये, आकर्षित न हो जाये कि ...

वह फिर सबकुछ मान-सम्मान की लिए ही करने लगे। जहाँ मान मिले वही सेवा करे। इससे सेवा भाव समाप्त हो जाता है।

तो आज से ..

अपने सूक्ष्म आकर्षणों के ऊपर ध्यान दे .. केवल एक में आकर्षण ..

" वही सबसे ज्यादा सुन्दर है .. वही सबसे ज्यादा गुणवान है .. वही सबसे ज्यादा सम्पत्तिवान है .. वही सबसे अधिक शक्तिशाली है "

उसकी ओर आकर्षित होंगे तो हम भी उसकी तरह बन जायेंगे। तो डिटैच करे अपने को।

और आज से बाबा की उस most beautiful divine स्वरुप को देखने की practise करे ..

" बस हम उसे देख रहे है .. उसकी सुन्दरता को निहार रहे है .. उसकी वायब्रेशन्स में कितना आकर्षण है "

... उसे feel करे और उसकी किरणें ग्रहण करते रहे तो बहुत सुखद अनुभूति होगी।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org